विचार बिन्दु

सबसे उत्तम दान यह है कि आदमी को इतना योग्य बना दो कि वह बिना दान के काम चला सके। –तालमुद

साहित्य और राजनीति : यह रिश्ता क्या कहलाता है?

साहित्य और राजनीति के अंत: संबंधों पर प्राय: बात होती है और लगता है कि लोग सीधे-सीधे दो खेमों में बंटे हुए हैं। एक खेमा उनका है जो मानते हैं कि साहित्य को राजनीति से पर्याप्त दूरी बरतनी चाहिए, जबकि दूसरा खेमा उन लोगों का है जो मानते हैं कि साहित्य को (और साहित्यकार को भी) राजनीति में दिलचस्पी रखनी चाहिए। इन दोनों खेमों के अनेक उपभेद भी हो सकते हैं। जो लोग ऐसा मानते हैं कि साहित्य को राजनीति से दूर रहना चाहिए उनमें से अधिकांश राजनीति को बहुत बुरा मानते हैं और इसलिए वे चाहते हैं कि साहित्य जैसी पवित्र चीज़ राजनीति जैसी अपवित्र चीज़ से दूर ही रहे। ऐसा सोचने और चाहने वालों में कुछ लोग बहुत भोले हैं। उन्होंने जो बात कभी सुन ली थी, उसी को वे दुहराए जाते हैं, उस पर विचार करने की, उसे तर्क की कसौटी पर कसने की ज़हमत वे नहीं उठाते हैं। अगर उन्होंने कभी कहीं यह पढ़ या सुन लिया था कि राजनीति धूर्तों का खेल है, तो इस बात को अपने दिल-ओ-दिमाग़ पर खुदवा लिया है। साहित्य कर्म उनके लिए बहुत महान और पवित्र है, जबकि राजनीति बहुत बुरी और गंदी है। कहना अनावश्यक है कि यह अति सामान्यीकरण है।

दूसरी तरफ़ वे लोग हैं जो मानते हैं कि राजनीति हमारे जीवन का एक अनिवार्य अंग है, वह हमारे जीवन के हर पहलू को प्रभावित करती है, अत: साहित्य और साहित्यकार को उससे तनिक भी दूरी बरतने की ज़रूरत नहीं है। इस सोच वाले लोगों में वे आदर्शवादी भी शामिल हैं जो प्रेमचंद के इस कथन को याद करते हैं कि साहित्य राजनीति के आगे चलने वाली मशाल है। प्रेमचंद का पूरा कथन यह है:– ''वह (अर्थात साहित्य) देशभक्ति और राजनीति के पीछे चलने वाली सच्चाई भी नहीं, बल्कि उनके आगे मशाल दिखाती हुई चलने वाली सच्चाई है। पढ़ने-सुनने में यह बात चाहे कितनी भी अच्छी क्यों न लगे, ज़मीनी हक़ीक़त इससे बहुत भिन्न है। लेकिन यह तो मानना ही होगा कि आप भले ही राजनीति से दूरी बरतें, राजनीति आपके जीवन को कभी नहीं छोड़ती है। और इसलिए साहित्य और साहित्यकार का राजनीति से दूरी बरतना तर्क संगत नहीं है।''

अब यहीं एक बात यह आती है कि राजनीति से क्या आशय है, और साहित्य का राजनीति से रिश्ता किस तरह का हो। कहा जा सकता है कि राजनीति दो शब्दों का एक समूह है राज नीति जिसमें राज का मतलब शासन और नीति का मतलब उचित समय और उचित स्थान पर उचित कार्य करने की कला अर्थात् नीति विशेष के द्वारा शासन करना या विशेष उद्देश्य को प्राप्त करना राजनीति है। इसे यों भी कह सकते हैं कि जनता के सामाजिक और आर्थिक स्तर का प्रबंध करना राजनीति है। इस बात को अधिक सरल बनाकर कहें तो शासन में पद प्राप्त करना तथा सरकारी पद का उपयोग करना राजनीति है। सिद्धांतत: राजनीति और सत्ता को अलग करके देखा जाना चाहिए लेकिन व्यवहार में ये एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। व्यावहारिक रूप से राजनीति दलगत भी हो सकती है और निर्दलीय भी। जहां तक साहित्य और राजनीति के अंत: संबंध की बात है साहित्य किसी राजनीतिक विचारधारा या दल या नेता का समर्थन या विरोध करके राजनीति से अपने जुड़ाव का परिचय दे सकता है। अधिक व्यापक रूप से देखें तो किसी विचारधारा विशेष को पसंद कर और अपने साहित्य में उसे रूपायित करके साहित्य राजनीति से अपनी निकटता बताता है। भारत सहित दुनिया भर के साहित्य में मार्क्सवाद से संलग्नता इस बात का बेहतरीन उदाहरण है। हिंदी का प्रगतिशील आंदोलन इसी का भारतीय रूप है। बाद में हिंदी साहित्य की दुनिया में प्रगतिशील लेखक संघ और जनवादी लेखक संघ सीधे-सीधे दो अलग-अलग राजनीतिक दलों से संबद्ध रहे और संबद्ध हैं। इसी तरह अन्य दलों और विचारधाराओं से भी साहित्य का नज़दीकी रिश्ता रहा है। बहुत सारे लेखकों ने ख़ुद चुनाव भी लड़े हैं या कम से कम चुनाव लड़ने वालों का खुलकर समर्थन (या विरोध) किया है। राजनीति से जुड़ाव समर्थन के रूप में ही नहीं, विरोध के रूप में भी देखा जा सकता है। साहित्य की दुनिया में बहुत सारे लोग मार्क्सवाद का विरोध करके भी अपने राजनीतिक होने का परिचय देते हैं।

भारत सहित दुनिया भर के साहित्य में मार्क्सवाद से संलग्नता इस बात का बेहतरीन उदाहरण है। हिंदी का प्रगतिशील आंदोलन इसी का भारतीय रूप है। बाद में हिंदी साहित्य की दुनिया में प्रगतिशील लेखक संघ और जनवादी लेखक संघ सीधे-सीधे दो अलग-अलग राजनीतिक दलों से संबद्ध रहे और संबद्ध हैं। इसी तरह अन्य दलों और विचारधाराओं से भी साहित्य का नज़दीकी रिश्ता रहा है।

समय-समय पर साहित्यकारों ने राजनीतिक घटनाक्रम पर अपनी-अपनी तरह से प्रतिक्रियाएं दी हैं। कभी वे प्रतिक्रियाएं प्रत्यक्ष रही हैं तो कभी उनके साहित्य के माध्यम से सामने आई हैं। हमारे बहुत सारे साहित्यकारों ने समय-समय पर सरकारी सम्मानों को लौटाकर अगर अपनी सीधी प्रतिक्रियाएं दी हैं तो याद कीजिए भारतेंदु हरिश्चंद्र, निराला, नागार्जुन, भगवती चरण वर्मा, रांगेय राघव, भीष्म साहनी जैसे अनगिनत रचनाकारों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से राजनीतिक घटनाक्रम पर अपनी बात कही है। इधर अशोक वाजपेयी जिस तरह खुलकर राजनीति पर टिप्पणियां कर रहे हैं वह साहित्य और राजनीति की नज़दीकी का एक उम्दा उदाहरण है। और यह सब केवल आधुनिक काल में ही नहीं हुआ है। भक्ति काल या रीति काल में भी आपको ऐसे अनेक उदाहरण मिल जाएंगे। मीरा के काव्य में तुलसी के काव्य में, बिहारी के काव्य में – सब जगह आप राजनीतिक चेतना भी पाते हैं।

यहीं एक बात और कहना ज़रूरी है। बहुत सारे लोग साहित्य और राजनीति की निकटता को अच्छा नहीं मानते हैं। वे साहित्य की स्वायत्तता की बात करते हैं। मुझे लगता है कि यह भी एक नज़रिया है और इसका भी सम्मान किया जाना चाहिए। जिन्हें जगत गति नहीं व्यापती है, उन्हें न व्यापे। लेकिन जैसे वे अपनी सोच के लिए स्वतंत्र हैं वैसे ही उनसे भिन्न सोच वालों का भी सम्मान किया जाना चाहिए। लेकिन यहीं एक और प्रजाति सामने आती है। यह प्रजाति भोली नहीं, चालाक है। जब आप जीवन में या साहित्य में राजनीति पर कोई टिप्पणी करते हैं तो यह प्रजाति उछल कर सामने आती है और आपसे कहती है कि आप तो बहुत महान हैं, पवित्र हैं आप कहां राजनीति के इस दलदल में, कीचड़ में पांव धर रहे हैं। लेकिन यह इस प्रजाति की आपके प्रति सद्भावना नहीं होती है। यह एक बड़ी चालाकी होती है, आपकी आवाज़ को दबाने की। जब आप उनकी चहेती राजनीति की आलोचना करते हैं तभी उनकी ह तथाकथित सद्भावना जागती है। अगर आप भी कीर्तन करें, जैसा वे दिन-रात करते रहते हैं, तब राजनीति कीचड़ नहीं रह जाती है। तब वह पवित्र हो जाती है। तो इस कौशल से वे आपके प्रतिरोध की आवाज़ को दबाते हैं। पिछले कुछ बरसों में यह काम बहुत संगठित और योजनाबद्ध तरीके से हुआ है। एक राजनीतिक दल विशेष के आईटी सेल और उसके वेतनभोगी कर्मचारियों ने यही नहीं और भी अनेक धत्कर्म किए हैं। इधर एक बदलाव यह आया है कि पहले जो विचारधारा और दल उनके निशाने पर थे, अब वे भी पलटकर उनकी शैली में जवाब देने लगे हैं। इससे वातावरण खराब हुआ है।

निष्कर्ष रूप में, मेरा यह मानना है कि साहित्यकार को अपने परिवेश के प्रति पूरी तरह सजग होना चाहिए और उसे चीज़ों को गहराई में जाकर समझना चाहिए। ऐसा करने के लिए बहुत पढ़ना ज़रूरी होता है। दुर्भाग्य से इधर यह प्रवृत्ति कम होती जा रही है। पढ़ने के नाम पर वॉट्सएप पर आईटी सेल द्वारा उत्पादित और फिर इधर से उधर ठेली गई सामग्री ही बची रह गई है। केवल उसी को पढ़कर जब कोई साहित्य की बात करता है, साहित्यकार होने का दावा करता है तो उस पर गुस्सा भी आता है और दया भी आती है। आज एक पूरी पीढ़ी ऐसी आ गई है जिसे अपने समकालीन यथार्थ से, अपने अतीत से, अपनी परम्पराओं से – किसी भी अर्थपूर्ण बात से कोई लेना-देना नहीं है। उसे जितना रटाया गया है वह उसी का जाप करती रहती है और यह मुगालता पालती है कि वह साहित्य की सेवा कर रही है। बीस-पच्चीस हज़ार रुपये खर्च कर किताब छपवा लेने और सोशल मीडिया पर उसे ख़ुद प्रचारित करने के मौकों ने इस प्रवृत्ति को खूब बढ़ावा दिया है। लेकिन इस तरह किए गए काम को और कुछ भी कहा जाए, साहित्य नहीं कहा जा सकता, और न ऐसा करने वालों को साहित्यकार कहा जा सकता है। साहित्य को अपने समय के प्रति न केवल पूरी तरह से सजग रहना चाहिए, उसमें उसे सार्थक हस्तक्षेप भी करना चाहिए। इतना ज़रूर है कि जब वह हस्तक्षेप साहित्य के माध्यम से हो तो साहित्य की शर्तों के अनुरूप हो, अन्यथा वह लेखन नारा बन कर रह जाता है। हिंदी साहित्य में और अन्य भाषाओं के साहित्य में भी इस बात के उदाहरणों की भी कमी नहीं है।

–अतिथि संपादक,
डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल
(शिक्षाविद और साहित्यकार)

800 किलोमीटर की साइकिल यात्रा पर निकली उदयपुर की डिम्पल भावसार

डिम्पल एक गृहिणी होते हुए भी पशु प्रेम का संदेश लेकर साइकिल से सफर तय करेगी

उदयपुर,(कासं)। गौ माता को राष्ट्र माता का दर्जा दिलाने की अनोखी मुहिम का शुभारंभ रविवार को उदयपुर से हुआ। इस मुहिम के तहत उदयपुर एनिमल फीड (हैप्पी एंड चॉइस वेलफेयर सोसाइटी) की ओर से यूएएफ संस्थापक डिंपल भावसार उदयपुर से दिल्ली तक की 800 किलोमीटर की साइकिल यात्रा कर रही है।

यात्रा का शुभारंभ रविवार को आरके सर्कल से मुख्य अतिथि समाजसेवी प्रदीप कुमावत, अर्थ डायग्नोस्टिक के अर्पित, संदीप राठौड़, शिक्षाविद् प्रीति सोगानी, डॉ. कमलेश शर्मा, रिमझिम बख्शी, सोनाली कुमार, पशुप्रेमी सत्यजीत, एडवोकेट निर्मल पंडित, शौर्या जैन, वेणुगोपाल सर की मौजूदगी में हुआ। अतिथियों ने डिंपल को श्रीफल भेंट कर और साइकिल यात्रा को हरी झंडी दिखाकर यात्रा का शुभारंभ किया।

■ डिंपल भावसार की यह यात्रा देश के विभिन्न 20 शहरों से होती हुई दिल्ली तक जाएगी

संस्था के रवि भावसार ने बताया कि यह यात्रा यूएएफ की संस्थापक डिंपल भावसार के द्वारा निकाली जा रही है जो एक गृहिणी होते हुए भी पशु प्रेम का संदेश लेकर साइकिल से 800 किलोमीटर का सफर तय करेगी ताकि पशुओं पर हो रही क्रुरता को रोका जा सके। यह यात्रा देश के विभिन्न 20 शहरों से होती हुई दिल्ली तक जाएगी। डिंपल ने बताया कि यात्रा का उद्देश्य पशुओं और पर्यावरण के प्रति जागरूकता पैदा करना है। इसके तहत मार्ग में आने वाली 50 विद्यालयों के 25 हजार छात्रों को पशु प्रेम के प्रति जागरूकता का संदेश दिया जाएगा। मिराज ग्रुप वह हैप्पी एंड चॉइस वेलफेयर सोसाइटी मिलकर इस मार्ग में दस हजार वृक्षारोपण भी करेंगे। इस मौके पर हैप्पी एंड चॉइस वेलफेयर सोसायटी के संस्थापक रवि भावसार ने बताया कि संस्था द्वारा अन्य कई प्रोजेक्ट जैसे रेबीज मुक्त भारत, मिशन जीरो हंगर, गोपाल वाहिनी, प्रोजेक्ट प्यास, प्रोजेक्ट सुरक्षा, प्रोजेक्ट जीव वाणी, प्रोजेक्ट शिक्षा, प्रोजेक्ट वृक्षारोपण आदि भी चला रही है। इस अवसर पर सोशल मीडिया से लकी, चेष्टा खत्री, भावेश सालवी ने भी इस कार्य की सराहना की और संस्थापक डिंपल भावसार व यूएएफ के पेडल से परिवर्तन यात्रा के सदस्यों का तिलक लगाकर स्वागत किया।

गौ माता को राष्ट्र माता का दर्जा दिलाने की अनोखी मुहिम को लेकर उदयपुर की डिंपल भावसार 800 किलोमीटर की साइकिल यात्रा पर रवाना हुई।

'राष्ट्रीय फैशन प्रौद्योगिकी संस्थान ने देश दुनिया में अपनी विशिष्ट पहचान बनाई है'

केन्द्रीय वस्त्र मंत्री गिरिराज सिंह ने निफ्ट में नवीन छात्रावासों का उद्घाटन किया

जोधपुर, (कासं)। राष्ट्रीय फैशन प्रौद्योगिकी संस्थान (निफ्ट) के जोधपुर परिसर में नवीन छात्रावासों का उद्घाटन रविवार को केंद्रीय वस्त्र मंत्री गिरिराज सिंह ने किया। इस दौरान परिसर में नवनिर्मित अटल छात्रावास, सावित्रीबाई फुले छात्रावास और रानी पद्मावती छात्रावास का भी उद्घाटन किया गया।

उद्घाटन समारोह के आयोजित कार्यक्रम में केन्द्रीय वस्त्र मंत्री गिरिराज सिंह ने कहा कि निफ्ट ने आज देश-दुनिया में अपनी विशिष्ट पहचान बनाई है, यहां के विद्यार्थियों ने फैशन की दुनिया में एक अलग छाप छोड़ी है। आगे इंडस्ट्री से जुड़कर निफ्ट को अपने ब्रांड बनाने चाहिए, जिससे पूरे विश्व में भारत का कपड़ा जाना जाये। आज विश्व में भारत की अनोखी पहचान है, पिछले दस सालों में केन्द्र सरकार के कार्यों से भारत विश्व में 5वीं अर्थव्यवस्था बना है, साथ ही हर वर्ग के लिए सरकार की ओर से प्रयास किये गए है। केन्द्रीय वस्त्र मंत्री गिरिराज सिंह ने कहा कि आज इंडस्ट्री और संस्थानों को जुड़कर कार्य करने की जरूरत है। इससे युवाओं को मौके मिलेंगे। उन्होंने कहा प्रदेश में सेल्फ हेल्प ग्रुप के सहयोग से हमारे शिल्पकारों और बुनकरों को जोड़ना चाहिए जिससे हुनरमंद लोगों के प्रयास से देश की तरक्की हो। आज लोगों के खरीदने की क्षमता में इजाफा हुआ है, जिससे लोग देश के उत्पादों को भी खरीदने लगे है, इसमें प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के मन की बात कार्यक्रम का बड़ा योगदान है। केन्द्रीय वस्त्र मंत्री गिरिराज सिंह ने कहा कि हम सबको क्लाईमेट चेंज में अपना महत्वपूर्ण योगदान देना चाहिए। केन्द्रीय वस्त्र मंत्री गिरिराज सिंह ने कहा कि युवा दर्जी के लिए रोजगारोन्मुखी पाठ्यक्रम शुरू करना चाहिए, इसमें निफ्ट के विद्यार्थी भी युवाओं से जुड़कर उन्हें प्रशिक्षित करें, जिससे उन्हें आधुनिक तकनीकियों की जानकारी मिल सकें।

■ मंत्री गिरिराज सिंह ने निफ्ट में एक पेड़ मां के नाम अभियान के अंतर्गत पौधरोपण किया

इस मौके पर राज्यसभा सांसद राजेन्द्र गहलोत ने कहा कि भारत सरकार के इस संस्थान ने आज जोधपुर का नाम नेशनल और इंटरनेशनल लेवल पर ला दिया है। साथ ही मुझे जानकारी है कि इस संस्थान के माध्यम से हमारे शिल्पकारों को समय-समय पर प्रशिक्षण दिया जाता रहता है, वो कदम भी सराहनीय है। इसी तरह आगे भी संस्थान प्रदेश के शिल्पकारों, बुनकरों के लिए नवाचार करता रहे।

महानिदेशक आईएएस तनु कश्यप ने बताया कि इन छात्रावासों में 500 से अधिक विद्यार्थियों के रूकने की व्यवस्था होगी। निफ्ट निदेशक प्रो. जीएचएस प्रसाद ने बताया कि सभी कमरों में पूरी तरह से वातानुकूलित सिस्टम, इंटरनेट की सुविधा, इंडोर-आउटडोर खेल सुविधाएं, लिफ्ट सेवा, योग एवं ध्यान कक्ष भी बनाए गए हैं। छात्रावासों में फायर हाइड्रेंट सिस्टम, फायर अलार्म और स्मोक डिटेक्टर प्रत्येक मंजिल पर रखे गए हैं।

केन्द्रीय वस्त्र मंत्री गिरिराज सिंह ने रविवार को निफ्ट जोधपुर में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के मन की बात कार्यक्रम का लाइव प्रसारण सुना। इस दौरान निफ्ट के सभी शिक्षक और कर्मचारी मौजूद रहे। इस मौके पर केन्द्रीय वस्त्र मंत्री श्री गिरिराज सिंह ने कहा कि मन की बात कार्यक्रम आज देश के उत्पादों के प्रचार में अहम योगदान दे रहा है। केन्द्रीय वस्त्र मंत्री गिरिराज सिंह ने राष्ट्रीय फैशन प्रौद्योगिकी संस्थान (निफ्ट) में एक पेड़ मां के नाम अभियान के अंतर्गत पौधरोपण किया और कहा कि आज पौधारोपण करना देशहित में सबसे बड़ा योगदान है। इसे सभी को जिम्मेदारीपूर्वक करना होगा।

सिंचाई विभाग की अनदेखी के चलते एलकेडी माइनर टूटा, खेत जलमग्न हुये

खेत जलमग्न होने से खेतों में खड़ी फसलें, डिग्गियों व बोरवैल नष्ट, लाखों का नुकसान

लूणकरनसर, (निसं)। सिंचाई विभाग की अनदेखी के चलते कंवरसेन लिफ्ट नहर का एलकेडी माइनर चक तीन एलकेडी के पास टूट गया। माइनर टूटने से खेत जलमग्र हो गए। इससे खेतों में खड़ी फसलें, डिग्गियों व बोरवैल नष्ट होने से लाखों का नुकसान हुआ है।

गौरतलब है कि गत 3 जून को चक तीन एलकेडी में माइनर टूट गया था। माइनर में टूटी जगह पर नहर विभाग की ओर से मिट्टी से खानापूर्ति कर बांधा गया तथा प्लास्टिक लगाकर पानी का रोका गया था। विभाग की लापरवाही के चलते शुक्रवार आधी रात के बाद दुबारा उसी जगह से माइनर फिर से टूट गया। माइनर टूटने से खेतों में पानी भरने से चक तीन एलकेडी के काश्तकार प्रभुराम, रामचन्द्र, हेतराम, बलराम, राजेन्द्र, किसनलाल, रूकमा देवी, मघी देवी, गोगा देवी आदि के खेत में बनी सिंचाई की दो डिग्गियों, दो बोरवैल के साथ खेत में खड़ी मूंगफली, ग्वार, बाजरा, जोई, हरा चारा समेत अन्य फसलें नष्ट हो गई। खेत में मिट्टी भरने से जमीन ऊबड़-खाबड़ होने से लाखों का नुकसान हुआ।

■ गत 3 जून को चक तीन एलकेडी में माइनर टूट गया था, नहर विभाग की ओर से मिट्टी से खानापूर्ति कर बांधा गया था तथा प्लास्टिक लगाकर पानी का रोका गया था

माइनर टूटने के बाद सुबह अगले दिन 4 चार बजे किसानों का पता चला। किसान नहर विभाग के सहायक अभियंता व कनिष्ठ अभियंता को फोन करते रहे, लेकिन विभागीय अधिकारी चार-पांच घण्टे बाद मौके पर पहुंचे। इस दौरान किसानों ने उपखण्ड अधिकारी राजेन्द्र कुमार को फोन करने पर टूटे माइनर का पानी बंद करवाया गया। माइनर टूटने की सूचना मिलने के बाद राजस्व तहसीलदार बाबूलाल ने हल्का पटवारी भरत रोझ को मौके पर भेजा। हल्का पटवारी भरत रोझ ने माइनर टूटने से किसानों की डिग्गियों, बोरवैल, फसलों व मिट्टी भरने से हुए नुकसान की रिपोर्ट तहसीलदार को सुपुर्द की है।

माइनर टूटने से खेतों में पानी भरने से हुए नुकसान को लेकर पीड़ित किसान शनिवार को उपखण्ड अधिकारी राजेन्द्र कुमार से मिले और मुआवजा दिलाने की मांग उठाई। किसानों ने बताया कि नहर विभाग की ओर से पटड़ों की मिट्टी हटाने व नहर की मरम्मत में खामी रखने से गत 3 जून को माइनर टूट गया था।

इसके बाद दुबारा नहर को बालू रेत व प्लास्टिक से बंधाई करने से रात को फिर से टूट गया। माइनर से खेत जलमग्र होने से फसलें नष्ट हो गई है तथा पानी की डिग्गियों व बोरवैल नष्ट हो गए। उपखण्ड अधिकारी ने नहर की मरम्मत को लेकर विभागीय अधिकारियों को निर्देश दिए तथा खेतों में हुए नुकसान का आंकलन करवाकर किसानों को मुआवजे का आश्वासन दिया।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

सोमवार 29 जुलाई, 2024

सावन मास, कृष्ण पक्ष, नवमी तिथि, सोमवार, विक्रम संवत 2081, भरणी नक्षत्र दिन 10:55 तक, गंड योग सायं 5:55 तक, तैतिल करण प्रात: 6:42 तक, चन्द्रमा आज सायं 4:45 से वृष राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-कर्क, चन्द्रमा-मेष, मंगल-वृष, बुध-सिंह, गुरू-वृष, शुक्र-कर्क, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज दूसरा सावन वन सोमवार है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: अमृत सूर्योदय से 7:33 तक, शुभ 9:13 से 10:53 तक, चर 2:13 से 3:53 तक, लाभ-अमृत 3:53 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 7:30 से 9:00 तक। सूर्योदय 5:53, सूर्यास्त 7:13

मेष
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। घर-परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी।

वृष
घर-गृहस्थी के खर्चों पर नियंत्रण रखना ठीक रहेगा। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। नौकरीपेशा व्यक्तियों को अतिरिक्त जिम्मेदारी मिल सकती है।

मिथुन
आर्थिक/वित्तिय मामलों में संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक यात्रा सफल रहेगी।

कर्क
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

सिंह
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। नौकरीपेशा व्यक्तियों का प्रभाव-प्रभुत्व बढ़ेगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कन्या
अपनी कार्य योजना को सीमित रखें। शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। यात्रा में परेशानी हो सकती है।

तुला
व्यावसायिक वार्ता के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। कारोबारी अनुबंध प्राप्त हो सकते हैं। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा।

वृश्चिक
स्वास्थ्य से संबंधित चिन्ता दूर होगी। अनहोनी की आशंका से बना हुआ मन का भय समाप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी।

धनु
घर-परिवार में स्वास्थ्य से संबंधित परेशानी हो सकती है। परिवार में आपसी वाद-विवाद बढ़ सकते हैं। आवश्यक कार्यों के संबंध में दुविधा बनी रहेगी।

मकर
घर-परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कुंभ
घर-परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

मीन
आर्थिक/वित्तिय मामलों में संतुलन बना रहेगा। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक वार्ता के लिए दिन अच्छा है। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी।